तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय

आई.आई.आई.टी. झलवा, प्रयागराज

विद्यालय ई-पत्रिका

2024-25

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
क्षेत्रीय कार्यालय, ब०रे०का०, कंचनपुर, वाराणसी - 221004
Regional Office, B.L.W. Kanchanpur, Varanasi - 221004
शिक्षा मंत्रालय, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, भारत सरकार
Ministry of Education, Deptt. Of School Education & Literacy, Govt. of India
e-mail:- kvsrovns@gmail.com Website- www.https://rovaranasi.kvs.gov.in Ph:- 0542-2300825

फा.430331/के०वि०सं०(वारा०)/20223-24

संदेश

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय आई.आई.आई.टी. झलवा, प्रयागराज द्वारा अपनी वार्षिक ई-पत्रिका का प्रकाशन करवाया जा रहा है। समग्र संभावनाओं से समन्वित नव पुष्पित छात्रों एवं सभी शिक्षकों के भाव एवं विचारों का प्रतिबिंब स्वरूप विद्यालय की वार्षिक ई-पत्रिका आपके समक्ष है। किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है। उसी से विद्यालय की सांस्कृतिक, शैक्षणिक, खेलकूद एवं अनेक रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि का भी पता चलता है। विद्यालय पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि शिक्षार्थियों के समुचित सकारात्मक, सर्वांगीण एवं सृजनात्मक विकास हेतु विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध है।

पत्रिका के संपादक तथा संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। इस ई-पत्रिका के प्रकाशन से छात्रों में निहित सृजनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सकेगी तथा इन्हीं बाल कलाकारों में से भविष्य में कुछ अच्छे चित्रकार, पत्रकार, लेखक व कवि रूप में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब होंगे, यह मेरा सहज विश्वास है।

(डॉ० अजय कुमार मिश्र)
उपायुक्त

प्रति:-
प्राचार्य,
केन्द्रीय विद्यालय
आई०आई०आई०टी० झलवा, प्रयागराज

भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद
Indian Institute Of Information Technology, Allahabad
An Institute of National Importance Established by Act of Parliament, Govt. of India)

प्रो. मुकुल एस. सुतावणे
निदेशक
Prof. Mukul S. Sutaone
B.E., M.E., Ph.D., FI.E.T.E., S.M.I.E.E.E.
Director

MESSAGE

It is very heartening to know that Kendriya Vidyalaya IIIT Jhalwa is publishing e-patrika for this year. The Patrika not only serves as an excellent platform for the young minds to show-case their latent talents and skills, but also preserves the record of activities to inspire future generations

The school plays vital role in shaping the psyche of future generation. It is here that foundations of a strong character and productive self is laid and build upon This makes schools perhaps quintessential organisation contributing in nation's development. I must admit that I have great admiration for teachers for their selfless devotion towards the society.

I would like to convey my profound regards to Principal, Teachers and Staff without which the school wouldn't have been able to achieve the feat. I wish good fortune to all children in their future endeavours. Effort put in by students is reflected in results leading to school development.

(Prof. Mukul S. Sutaone)
Director, IIIT-Allahabad &
Chairman, K.V. IIIT-Jhalwa

Deoghat, Jhalwa, (NCR), Subedarganj, Prayagraj - 211 015 U.P., INDIA, Phone : +91-532-2922222, 2922027, 2922004 (O), 2922512-13 (R)
E-mail : director@iiita.ac.in, msutaone@gmail.com, Web : www.iiita.ac.in

प्राचार्य की कलम से.....

केंद्रीय विद्यालय आई आई आई टी झलवा, प्रयागराज के बच्चों की सृजनात्मकता और उपलब्धियों की एक झलक अपने में समेटे ' ई.विद्यालय पत्रिका' का यह अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। केंद्रीय विद्यालय संगठन द्वारा स्थापित मानदंडों के अनुरूप इस विद्यालय ने अपनी शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक गतिविधियों के द्वारा बच्चों को ऐसी शिक्षा देने का प्रयास किया है जिससे कि ये बच्चे तेजी से बदलते समय के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हो सकें । केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पाठ्यक्रम और गतिविधियों का ढाँचा ऐसा है कि हम परंपरा और आधुनिकता-दोनों जीवन मूल्यों को छात्रों में एक साथ विकसित करने में सफल रहे हैं। यही कारण है कि केंद्रीय विद्यालय संगठन उस शैक्षणिक वातावरण को सृजित कर पाने में सक्षम हुआ है जिसमें बच्चे अकादमिक दक्षता के साथ-साथ सामाजिक और वैयक्तिक उपलब्धियां भी निरंतर हासिल कर रहे हैं।

छात्रों में विश्वास की भावना, दूसरों के प्रति सम्मान और विचार के स्तर पर नवोन्मेष को बढ़ावा देना मेरी प्राथमिकता में रहा है। मेरे विचार से ये वे आधार स्तम्भ हैं जिनके ऊपर उच्च गुणवत्ता को समाहित किए हुए विद्यालयी जीवन का निर्माण किया जा सकता है इसलिए हम इस पर सर्वाधिक जोर देते हैं कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ छात्रों में समझ और आलोचनात्मक विवेक की भावना भी विकसित हो।छात्रों की सह-शैक्षणिक उपलब्धियां और रचनात्मकता बहुत हद तक इसी प्रेरणा का परिणाम है।

केंद्रीय विद्यालय आई आई आई टी झलवा, प्रयागराज के प्राचार्य के रूप में में इस अंक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों को बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक विद्यालय के छात्रों की रचनात्मकता को और अधिक समृद्ध करेगा।

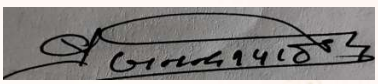

प्राचार्य
(बृज नंदन पाण्डेय)

सम्पादक की कलम से..

विद्यालय पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करने में हमें अपार हर्ष हो रहा है। यह विद्यालय एक उपवन के समान है। जहाँ के प्यारे बच्चे विभिन्न पुष्प हैं। जब ये पुष्प प्रस्फुटित और पल्लवित होंगे तब सुदूर देश तक इनकी सुगंध अवश्य फैलेगी, वास्तव में ये छात्र/छात्राएँ ही देश के भावी कर्णधार हैं। ये ही भविष्य के नेतृत्वकर्ता, प्रशासनिक अधिकारी, सैनिक, डॉक्टर, इंजीनियर, कवि तथा लेखक हैं। आज के होनहार बच्चे कल अपने कर्म की कलम से देश का भविष्य लिखेंगे और इसकी शुरूआत अभिभावकों तथा शिक्षकों के सहयोग से ही होगी.

केन्द्रीय विद्यालय आई.आई.आई.टी. झलवा विद्यालय की पत्रिका के इस अंक में होनहार बच्चों ने अपनी कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का उत्कृष्ट परिचय दिया है। आज मनुष्य ने विज्ञान तथा तकनीक के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति की है साथ ही मानव मूल्यों में भी गिरावट आयी है। इस युग में एक ओर युवा पीढ़ी के भटकाव का डर है तो दूसरी ओर सामाजिक रिश्तों तथा देश प्रेम के दुराव का भय , परन्तु हर्ष का विषय है कि बच्चों से अपनी रचनाओं में इन विषयों को समेटते हुए सकारात्मक अभिव्यक्ति दी है।

इस पत्रिका में एक ओर बाल कल्पनाएँ हैं तो दूसरी ओर अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण और पहचान बनाने का सपना। इस विद्यालय पत्रिका की सामग्री इकट्ठा करने के दौरान कुछ समस्या अवश्य आयी परन्तु विद्वान शिक्षकों के पथ प्रदर्शन से छात्र जागरूक हुए और अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया. साथ ही विद्यालय की पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रदर्शन को भी चित्रित किया गया.विद्यालय पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी सभी सुधीजनों को में साधुवाद देता हूँ.अगले अंक में इससे बेहतर प्रयास की अपेक्षा रहेगी.

सत्यब्रत जायसवार
पी.जी.टी. (हिन्दी)

,

प्रधान संरक्षक

श्री अजय कुमार मिश्र

(उपायुक्त, के.वि.सं. वाराणसी संभाग)

संरक्षक

श्री बृज नंदन पाण्डेय

(प्राचार्य)

सम्पादन मण्डल

*शिक्षक सम्पादक-

1. श्री सत्य ब्रत जायसवार (स्नात्तकोत्तर शिक्षक हिंदी)- हिंदी विभाग
2. श्री अफज़ल ए.सिद्दीकी (प्र.स्ना.शिक्षक, अंग्रेजी)-अंग्रेजी विभाग
3. सुश्री आनंदिनी दीक्षित प्र.स्ना.शिक्षक, संस्कृत)-संस्कृत विभाग

*विद्यार्थी सम्पादक -

1. ईशा तिवारी कक्षा XII
2. स्वरिका सिंह कक्षा X

*****

विषय सूची

हिंदी विभाग

क्रम	प्रकरण	नाम	कक्षा
1.	एक पहचान,एक तारा बन जाऊं	दिव्या ओझा	XI
2.	हमारी मातृभाषा हिंदी	अंशिका मौर्य	X
3.	शिक्षक,मासूम भरोसा	भाविका गुप्ता	XII
4.	संघर्ष	दिपांशु वर्मा	XII
5.	नई राह	अनुष्का सिंह	XII
6.	रजनीगंधा	सत्यम प्रजापति	XII
7.	कुछ चुटकुले	कीर्तिका त्रिपाठी	IX
8.	प्रेमचंद जी	आयुष पाण्डेय	XII
9.	चाह	आयुषी पाण्डेय	XII
10.	बूँदें भागीं,बूँदें दौड़ीं	सत्यम यादव	VII
11.	नील गगन	अनन्या गुर्टू	VIII
12.	हरियाली	दिपाली कुमारी	V
13.	मेरी सुन्दर धरती	सान्वी कुशवाहा	V
14.	लड़के की तरह लड़की भी	रेशु चौधरी	X
15.	कोरोना	शर्मिष्ठा द्विवेदी	XII
16.	सुखदायी बनाम दुखदायी	अक्षत गुप्ता	XII
17.	हमारा केन्द्रीय विद्यालय	विशेष सिंह	XII
18.	चरित्र	पुष्पित श्रीवास्तव	XII

संस्कृत विभाग

क्रम	प्रकरण	नाम	कक्षा
19.	शारदा स्तवनम	सुश्री आनंदिनी दीक्षित	प्र.स्ना.शि.सं.
20.	लक्ष्यं	आस्था सिंह	IX
21.	मम देवा: (संकलितम्)	साक्षी पाल	IX
22.	बाल: खेलिष्यति	अनामिका सिंह	VIII
23.	मम माता (निबंध:)	अन्वी नारायण	VII
24.	अमृत बिन्दव: (संकलितम्)	लक्ष्मी देवी	IX
25.	हे अम्ब !!! आगच्छ पुनरैकवारम्	वर्तिका यादव	IX
26.	किम् अस्ति तत् पदम् ?	पुण्या मिश्रा	VIII
27.	विजयी भव !	अनुप्रिया सिंह	VIII
28.	अये मानव ! नैव जानासि ?	सौम्या त्रिपाठी	IX
29.	वसुधैव कुटुम्बकम् (निबंध:)	अंशिका मौर्य	X
30.	जलमेव जीवनम्	भानु प्रताप सिंह	VII
	ENGLISH SECTION		
31.	Embracing Change with A Smile: A New Adventure Awaits	Riddhi Srivastava	XI
32.	"Tears and Smiles: Embracing Change"	Samriddhi Dubey	XI

33.	RIDDLES	Kritika Singh	VII
34.	BASKET BALL	Krish	XI
35.	SKY FULL OF MOUNTAINS,MORROW	Esha Tiwari	XII
36.	SKILL	Jhalak verma	VI
37.	Literature: A World of Words.	Tamanna singh	XII
38.	The Crescent Moon	Mr.Afzal a siddiqui	TGT ENG.
39.	ALPHABET' FOR MOBILE THROUGH THE HELP OF MOBILE APPS NAME	Lakshmi devi	IX
40.	TRY-TRY AGAIN	Shreya	VII
41.	A LONELY GIRL!	Saumya Tripathi	IX

****

एक पहचान

दिव्या ओझा
कक्षा XI

छोड़ के अपना बसेरा, एक नए घर आती है,

नए रिश्ते, नए लोग अपने प्रेम से महकाती है।

अपनी पहचान की एक नई दुनिया बनाती है।

शक्ति है उस नारी की, हर दर्द हँस के सह जाती है।

नए रिश्ते प्रेम के भाव से अपनाती है।

फिर भी समाज नजरें, उसे हर छोटी बात में दोषी ठहराती है

बोलना, चलना, सब कुछ देखा जाता है,

फिर भी उसे सबका मोह लग जाता है।

शक्ति है उस नारी में, हर दर्द सहने की छोटी बात नहीं,
समाज सिर्फ एक बीज सोच की बोता है,

वही नई सोच में किसी के लिए, एक नई माँ में ममता का आँचल,

तो किसी के लिए जिंदगी बस घर का एक कोना होता है।।

काश! एक तारा बन जाऊँ

तमन्ना है कि एक तारा बन जाऊँ

अग्नि का जलता चिराग बन जाऊँ

ना छू पाए कोई मुझे ना सुन पाए कोई

मुझे ना मुझे हो किसी की आहट

ना हो किसी को मेरी चाहत

बस दूर कहीं अपनी ही दुनिया बसाऊं

बादलों की ओट में जाकर छिप जाऊँ

तमन्ना है कि बस एक तारा बन जाऊँ !!

***

हमारी मातृभाषा हिन्दी

अंशिका मौर्य
कक्षा X

अंग्रेजी में नंबर थोड़े कम आते हैं,

स्टाइल के लिए पूरी जान लगाते हैं

क्योंकि हम हिन्दी बोलने में शर्माते हैं.

एक समय था जब हिन्दी सबके जुबान पे रहा करती थी

माँ की एक आवाज से रात सुबह का उजाला बन जाता था.

माँ को हम मॉम बुलाते हैं

क्योंकि हम हिंदी बोलने में शर्माते हैं .

माना अंग्रेजी पूरी दुनिया को चलाती है,

पर हिन्दी भी तो हमारी पहचान अपने देश से कराती है.

क्यों न एक बार फिर से हिंदी को अपनाएँ

आओ हम सब मिलकर मातृभाषा हिन्दी को सर आँखों पर बिठाएँ ।

***

शिक्षक

भाविका गुप्ता
कक्षा XII

कुछ कर दिखाना था जीवन में
तो राह दिखाई शिक्षक ने।
सही - गलत का भेद न जाना हमने
फर्क सिखाया शिक्षक ने।
सफल होने की आस खो रहे थे हम
अपने ज्ञान से हमें सफल बनाया शिक्षक ने।
रंग कई हैं इस जीवन में
रंगों की दुनिया से पहचान करायी शिक्षक ने ।
पढ़ाई में कमजोर थे हम
नोबिता की तरह डोरेमॉन बनकर मदद की शिक्षक ने।
शक था हमें अपनी काबिलियत पर
पढ़ा लिखाकर कर काबिल बनाया शिक्षक ने ।

मासूम भरोसा

स्कूल में लंच का समय बस खत्म ही हुआ था । सभी बच्चे कक्षा में जा रहे थे। । कक्षा तीन की बच्ची तान्या को कक्षा आठ के छात्र रोहन से धक्का लग जाता है, वह गिर जाती हैऔर उसे चोट भी आ जाती है।तब वह अपने भाई तनीष को बुलाती है जो कक्षा छह का छात्र था। उस समय मैं भी कक्षा ४वी में ही कालांश पढ़ा रही थी । अपने भाई का हाथ पकड़ कर आती है और उसी बच्चे की तरफ इशारा करके अपने भाई को बताती है कि "भैया, वही लड़का है जिसने मुझे धक्का मारा!" उसे अपने भाई पर विश्वास था कि वह उसे मरेगा क्योंकि उसने उसे धक्का दिया था। मैं ये सब सामने से देख रही थी। तान्या छोटी बच्ची थी उसे यह भी पता नहीं कि तनीष रोहन से छोटा है, उसे मार नहीं पाएगा। लेकिन सुरक्षा और रिश्ते के भरोसे को देख कर मैं भावुक थी।

संघर्ष

दिपांशु वर्मा
कक्षा XII

संघर्ष ही तो जीवन का पर्यायवाची है

संघर्ष ही तो आपका जीवन साथी है.

बिना संघर्ष के कोई महान नहीं बनता

बिना संघर्ष के कोई इंसान भगवान नहीं बनता.

रखकर चाह मन में तुम सफलता की और चलते रहो

तुम संघर्ष करते रहो, संघर्ष करते रहो.

हो रही है परीक्षा तुम्हारे आत्मविश्वास की

उस विश्वास को ही तो दर्शाना है.

नहीं लौटना है अब बीच में से

अब चलते ही जाना है, चलते ही जाना है.

संघर्ष ही तो जीवन का पर्यायवाची है

संघर्ष ही तो आपका जीवन साथी है।

***

नई राह

अनुष्का सिंह
कक्षा XII

खुली आँखों से ख्वाब आज भी बुनती हूँ,
सुनी सुनाई बातें आज भी सुनती हूँ
लड़ते जाओ, आगे बढ़ते जाओ,
जीवन सफर पर बस चलते जाओ
एक पल भी रुके तो पीछे रह जाओगे,
दुनिया की भीड़ मे कहीं खो जाखोगे।
पीछे रह गए तो असफल कहलाओगे,
जीवन का सफर पूरा नहीं कर पर पीछे होने में बुराई कैसी, प्रथम आने की लड़ाई कैसी।
सबसे अलग होना बुरा है क्या ? ।

अपनी राह बनाना गुनाह क्या ?
हम वहाँ क्यों जाए जहाँ सब जाते हैं ,
चलो एक नए रास्ते की पहचान कराते हैं ।

जिस दुनिया में हैं उसी को न जान सके,
लालच के दलदल से इस शोर-शराबे से
खुद को न निकाल सके
इस भीड़ में अपनों की पहचान न दिखाई दे।

क्या आनंद है ? झूठे दिखावे में,
शीशे के झूमर और रेशम के पहनावे में।
जहाँ शान तो है पर खुशी नहीं, पैसा तो है पर संतुष्टी नहीं।

हमें तो इस सफर में पीछे ही रहना है,
एक-एक पल को खुलकर जीना है.
देर से पहुँचने का गम नहीं,
जीवन है कोई जंग नहीं.

***

रजनीगंधा

सत्यम प्रजापति
कक्षा XII

रजनी का प्रेम अब उभरा है, बादलों के छोर पर

रजनीगंधा महका है ग्रंथ- ग्रंथ
कोमल चाँदनी का तार सज उठी विभावरी
पहनकर रजनीगंधा का अलंकार |

डाली -डाली चपल चाँदनी का फैला राज
हँसू, बोलूं या देखूं प्रकृति का राग
देखकर रजनीगंधा कैसा फैला ये अनुराग ।

प्रेम करूँ, मौन रहूँ या छूलूँ बादलों के पत्र
अब जाकर जीवन में तिनक - तिनका प्रेम बहका है.

चमक रही धवल कनेर जोड़कर लाऊँ तो
तुम्हारे लिए रजनीगंधा से सजकर आऊँ तो ।

***

कुछ चुटकुले

कीर्तिका त्रिपाठी
कक्षा - IX

अगर गिलास टूटने के बाद भी घर में शांति है,
समझ जाना गिलास मम्मी ने तोड़ा है.

***

टीचर- संजू कोई ऐसा वाक्य बताओ, जिस में हिंदी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी का प्रयोग हो?
संजू-इश्क दी गली विच No entry.

***

एक समय था जब रात के 12 बजे के बाद भूत का राज होता था। लेकिन मोबाइल ने उनका भी रोज़गार छीन लिया है.

***

माँ-बेटा क्या कर रहे हो ?
बेटा - पढ़ रहा हूँ.
माँ- शाबास, वैसे क्या पढ़ रहे हो ?
बेटा - शोले फिल्म की कहानी ।

***

प्रेमचंद जी

आयुष पाण्डेय
कक्षा - XII

प्रिय प्रेमचंद जी,

क्या आशा करूँ कि आप ठीक होंगे? शायद हाँ पर यक़ीनन नहीं। आपको यह बताते हुए और दुःखी करना चाहूँगा कि आप आज भी प्रासंगिक हैं। सामाजिक कुरीतियों पर लिखने वाले लेखक के लिए सबसे बुरा होता है "अपने वक़्त के बाद भी प्रासंगिक होना । "

होरी का संघर्ष खेतों में जारी है। अब वो डीजल और खाद की क़ीमतों से त्रस्त है। गोबर शहरों में रोज़गार के लिए भटक रहा है। कितनी ही धनिया बेबसी में जी रही हैं। इन्हें अपने नेता की ज़रूरत है। कथा सम्राट आप इनका हौसला हैं, आप इनकी उम्मीद हैं।

इंसान की ही ईजाद की हुई नौकरी ने इंसानों को कैद कर रखा है। अब आधी उमर नौकरी की तैयारी में गुज़र जाती है और बची आधी इसे करते-करते । चक्रधर के मन की दुविधा आज हर उस युवा की है जो ज़िन्दगी को सोचने लगा है। महज़ पेट पालने के लिए आधी उम्र पढ़ाई की जाय और फिर दफ्तरों में क़लम घिसना कहाँ तक सही है |जीवन का आदर्श बड़ा होना चाहिए.वही आदर्श जो अमरकांत का था। पिता लाला थे, अथाह धन था, पर क्या मजाल उनसे रूपए माँगे.मजदूरी पसंद थी लेकिन किसानों से चूसकर एकत्र पैसे को छूना उनके लिए पाप था।

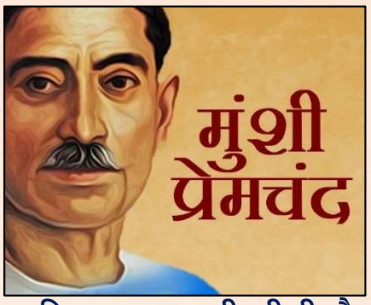

कहना न होगा कि आज बड़ी संख्या में किसानों की आत्महत्याओं के पीछे कर्ज़ का ही दुष्चक्र सबसे मुख्य है। महाजन बदल गए हैं, शक्लें बदल गयी हैं, शोषण की प्रक्रिया बदल गयी है, वह हिंस्र प्रवृत्ति और प्रकृति नहीं बदली है, जो पहले भी जोंक बनकर किसान का रक्त पी रही थी और आज भी पी रही है।

आपको पता है, इस गर्मी मैं दिल्ली जाना चाहता था। लाल किले की लालिमा को अपलक निहारना चाहता था। सब धरा रह गया है। एक साल बाद ये, दो साल बाद ये, तीन के बाद ये, ज़िन्दगी के दिनों से ज़्यादा हमारे प्लान हो गए हैं। कितने निश्चित! लेकिन फिर आप याद आते हैं और आपके साथ आपका वो कथन कि "जीवन, तुमसे ज़्यादा असार भी दुनिया में कोई वस्तु है? साँस का भरोसा ही क्या और इसी नश्वरता पर हम अभिलाषाओं के कितने विशाल भवन बनाते हैं .नहीं जानते नीचे जाने वाली साँस ऊपर आएगी या नहीं, पर सोचते इतनी दूर की हैं ,मानो हम अमर हैं |

सूरदास की झोपड़ी आज भी जल रही है और वो राख में ढूँढ रहा है अपने जीवन भर की कमाई.अब हामिद चिमटा नहीं खरीदता परिवार अब टूट गये हैं,दादी ही साथ न रही.कथा सम्राट, इस दुनिया को अब जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की जरूरत है जो भरोसा कायम कर सकें कि पंच परमेश्वर होता है. जिसे ईमान की बात करते बिगाड़ का डर नहीं होता है.आप मेरे जैसे उन युवाओं के सर की छत हैं,जिनसे पूछा जाता है कि साहित्य पढ़कर क्या करोगे ?आपका नाम लेकर इतरा सकता हूँ.

***

चाह

आयुषी पाण्डेय
कक्षा XII

कुछ कर गुजरने की चाह में वो निकल गई अपने रस्ते,
इस सफर में मिली कई हस्तियाँ, और वो बच गयी फँसते -फँसते.

उम्मीद थी उसे कि शायद सब हैं अपने
पता चला सच तो बिखर गए सब सपने

फिर रही न उम्मीद पर उम्मीदें जोड़ी
कि अब खड़े होना है अपने पैरों पर.

दुनिया का तो मकसद ही है तुझे गिराना
पर तुझको चिड़िया बनकर है उड़ जाना.

कर ले तू कोशिश आसमान को दुनिया छूने न देगी।
कोशिश कर तो सही की बाहें खुद फैलेगी ||

तू जान ले और मान ले कि दुनिया तेरी दुश्मन है
और मंजिल तेरी आसमान भी तेरा है
बस पंख फैला के देख तो, उड़ान तेरी होगी ||

पंख फैला वो उड़ चली, पाने को अपनी मंजिल
और वक्त बीतते हो गई उसको उसकी मंजिल हासिल |

***

बूंदें भागी बूंदें दौड़ी

सक्षम यादव
कक्षा VII

निकली है बनठन के देखो

छाने और मुनिया की जोड़ी।

बादल भरकर आए कहाँ से

यहाँ पे आके चुप्पी तोड़ी।

मौसम है यह ठंडा-ठंडा

आओ खाएँ गरम कचौड़ी।

मुझे ऐसा लगा अभी

कि बूंदें भागी बूंदें दौड़ी।

***

नील गगन

अन्नया गुर्टू
कक्षा - VIII

सर पर नील गगन है, क्या है येछाया नील गगन?
यह रहस्य क्या ?
उसे जानने को उत्सुक रहता है मेरा मन ।

यह भी रंग बदलता देखो निशि- दिन
हमको छलता देखो, इसकी जरा विकलता देखो ,
धरती पर झुका जा रहा छू लेने को उसका तन ।

इसके उर में भी ज्वाला है,
जिसने इसे फूँक डाला है;
जाने कैसा मतवाला है |

अपना हृदय जलाकर बनता जगती के सुख का कारण,
किन्तु यह निर्भीक बड़ा है
अगन - पवन में अड़ा - खड़ा है
जन जो पैरों बले पड़ा है।

उस असहाय प्राणी मात्र को भी देता है आश्वासन |
सर पर छाया नील गगन ।

***

हरियाली

दिपाली कुमारी
कक्षा - V

इतनी सुंदर हरियाली ,इतनी सुंदर हरियाली।

रंग-बिरंगे फूल, रंग-बिरंगे फूल।

हरे - हरे पेड़, हरी-हरी घास।

ये हरियाली है बनाती मेरे शहर को खास।

हमको भाती हरियाली, इतनी सुंदर हरियाली |

पेड़ लगाओ दुनिया सुंदर बनाओ।

***

मेरी सुन्दर धरती

सानवी कुशवाहा
कक्षा - V

धरती की बस यही पुकार, पेड़ लगाओ बारम्बार ।

धरती पर हरियाली हो , जीवन मे खुशहाली हो।

इतनी सुन्दर धरती हमारी, रंग-बिरंगे फूल।

इतने सुन्दर गगन को देख, सब दुख जाओ भूल ।

आओ चले हम वहाँ , जहाँ है खुशी बहुत अपार है।

पेड़ धरती की शान है, जीवन का आधार है।

आओ जीवन सुखी बनाएँ, आओ पेड़ लगाएँ।

धरती की बस यही पुकार, पेड़ लगाओ बारंबार।

***

लड़के की तरह लड़की भी

रेशू चौधरी
कक्षा - X

लड़कों की तरह लड़की भी,
मुट्ठी बाँध के पैदा होती है
लड़के की तरह लड़की भी,
माँ की गोद में हँसती - रोती है.

करते शैतानियाँ, दोनों एक जैसी
करते मनमानियाँ दोनों एक जैसी.

दादा की छड़ी, बूढ़ी दादी का चश्मा तोड़ते हैं,
दुल्हन के जैसे माँ का आँचल ओढ़ते हैं.

भूख लगे तो रोते हैं, लोरी सुनकर , सोते हैं,
आती है, दोनों की जवानी , बनती दोनों की कहानी.

दोनों कदम मिलाकर चलते हैं
दोनों दीपक बनकर जलते हैं.

लड़के की तरह लड़की भी नाम रोशन करती है,
कुछ भी नहीं अंतर फिर क्यों जन्म से पहले मारी जाती है?

***

कोरोना

शर्मिष्ठा द्विवेदी
कक्षा - XII

बुहान से चली विपदा, कैसी आफत लाई है ।
हम बच्चों की आजादी पर कैसी ये कठिनाई है?
बन्द हुए स्कूल और कॉलेज, कैसी विपदा छाई है?
संक्रामक बीमारी बन ये, महामारी कहलाई है,
कैसी विपदा आई, भाई कैसी विपदा आई है?

विश्व पटल के मानचित्र पर कैसी बदली छाई है?
यूरोप, अमरीका, जापान, जर्मन, फ्रांस, इटली परेशान
कैसी विपदा आई, भाई कैसी विपदा आई है?

मृत्यु करे तांडव साक्षात, क्या ये काली माई है,
भारत में भी लॉकडाउन बन, हर घर में यह छाई है.
कैसी विपदा आई, भाई कैसी विपदा आई है?

बन्द है खिड़की, बन्द दरवाजे बन्द हैं रेस्ट्रॉ मॉल थियेटर,
ऑफिस बन्द , कॉलेज बन्द, चौक, कचेहरी सब कुछ बंद
कैसी विपदा आई, भाई कैसी विपदा आई है ?

हम बच्चों की आजादी पर, कैसी रोक लगाई है?
हम भारत के बच्चे हैं, भारत भाग्य विधाता हैं,
हमें समस्याओं से भी मुक्ति पाना आता है।

हे विपदा तू है कितनी विकराल, पर हम सब तुझे हरा देंगे,
रह करके अपने घरों में तुझको हम मिटा देंगे।
यह शपथ नहीं सिर्फ मेरी है, पूरे भारत की है यह शपथ
बस कुछ दिन की है बात तेरी औकात बता देंगे,
हम भारत माँ के आँचल से, तेरा नाम मिटा देंगे
लॉकडाउन का पालन कर हम, तुझको जड़ से मिटा देंगे ।

***

अक्षत गुप्ता
कक्षा – XII

सुखदायी बनाम दुखदायी

बहुत समय पहले की बात है। दो चोरों ने एक राजमहल में चोरी करने का विचार बनाया। राज्य में एक महापुरुष का सत्संग चल रहा था। एक रात राजा अपनी सेना के साथ उनका सत्संग सुनने के लिए जाने वाले थे। यह बात चोरों को ज्ञात थी। उन्होंने सोचा राजमहल में चोरी करने का इससे अच्छा अवसर फिर कभी नहीं प्राप्त होगा। जिस रात राजा सत्संग सुनने के उद्देश्य राजमहल की ओर चलने लगे। मार्ग में महापुरुष के प्रवचन की आवाज सुनने के लिए तैयार हुआ। दूसरे चोर ने कहा- "सत्संग में क्या रखा है ? राजमहल में हीरे-मोती तथा अत्यधिक धन प्राप्त होगा जिससे जीवन सुखमय व्यतीत होगा।" पहले चोर ने उसकी बात नहीं मानी तथा सत्संग की ओर चला गया। दूसरा चोर चोरी करने के लिए राजमहल में जा पहुँचा। चोर ने सैनिकों की कमी होने के कारण राजमहल से बहुत से हीरे-मोती तथा धन चुराया और अपने घर वापस आ गया। जब राजा सत्संग से वापस लौटे तो उन्हें राजमहल में चोरी का समाचार प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने सैनिकों को दो दिन के अन्दर चोर का पता लगाने का आदेश दिया। अन्त में सैनिकों ने चोर को पकड़ कर राजा के सामने उपस्थित किया। चोरी का सारा धन भी बरामद कर लिया।राजा ने कहा इसे ऐसा दण्ड दिया जाय कि कभी भी कोई राजमहल में चोरी करने का साहस न कर सके। उन्होंने आदेश दिया कि दो दिन के बाद इस चोर को सारी प्रजा के सामने फाँसी पर लटका दिया जाय, ताकि वह तड़फ-तड़फ कर मरे। जिस दिन से सजा दी गई तो उसके दूसरे साथी चोर ने उसके पास जाकर कहा यदि मैं उस दिन तुम्हारी बात मान कर चोरी करने चला जाता - तो मुझे भी आज तुम्हारी तरह सूली पर लटकाया जाता। इसलिए कहा गया है कि अच्छे का साथ सदैव सुखदायी होता है और बुरे का साथ सदैव दुखदायी ।।

***

हमारा केन्द्रीय विद्यालय

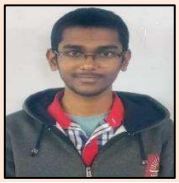

विशेष सिंह
कक्षा – XII

केन्द्रीय विद्यालय मेरा उत्तम शिक्षा का आलय है।

गाते गुण सभी इसका ऐसा यह विद्यालय है।

शिक्षक सभी गुणी विद्वान देते रहते नित नव ज्ञान हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान

सामाजिक विषयों का भी ज्ञान ।

पुस्तक की सीमाओं में बाँधा नहीं

बल्कि यहाँ ज्ञान बाँटा जाता है।

सदा चारित्रिक विषयों का ज्ञान यहाँ दिया जाता है।

नहीं पक्ष-पात का नाम यहाँ नहीं धर्म जाति का भेद

यहाँ सभी एक माता-पिता की संतान है।

भ्रातृत्व को बरसता प्यार यहाँ

अनुशासन है रीढ़ यहाँ की अनुशासन का ही नारा है

एक नियम कानून मात्र से चलता विद्यालय सारा है।

***

चरित्र

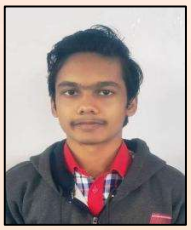

पुष्पित श्रीवास्तव
कक्षा – XII

जब हमारा वैभव चला जाता है। तो कुछ नहीं खोता है। लेकिन स्वास्थ्य के गिरने से हमारी हानि अवश्य होती है। परंतु चरित्र के गिरने से हमारी बहुत अधिक हानि होती है। अर्थात् हमारा सब कुछ चला जाता है।चरित्र ही मनुष्य के जीवन का सबकुछ होता है। इसमें मनुष्य का पूरा व्यक्तित्व होता है जिसके आधार पर मनुष्य सब कुछ अर्जित करता है। बिना चरित्र का मनुष्य एक निर्जीव प्राणी के समान होता है। जिनको सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। एक अच्छे चरित्रवाले मनुष्य का संबंध ईमानदारी, सच्चाई से होता है। बड़े-छोटे का सम्मान करने वाला कार्यों में निपुणता, कर्तव्यपरायणता, दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने वाला व जन कल्याण के कार्यों में लगे रहना आदि अनेक गुण एक अच्छे सभ्य चरित्र वाले मनुष्य की पहचान होती है।

मनुष्य के अंदर अच्छे चरित्र का निर्माण उसके परिवेश से आरंभ होकर बाहरी परिवेशों में भी होता है। किसी व्यक्ति के अंदर अच्छे गुणों का निर्माण करने में उनके माता-पिता, भाई-बहन व गुरूजन सहायक होते हैं। परंतु आज के समय में गुणों का अभाव होता जा रहा है। जिससे इन गुणों को प्राप्त करने में कमी भी दिखाई देने लगी है। आज की युवा पीढ़ी इन गुणों को नजरंदाज करने लगी है। जो कि अच्छे संकेत नहीं हैं। न तो उनके लिए और न ही हमारे समाज और देश के लिए क्योंकि एक अच्छे, सभ्य, गुणी चरित्रवान इंसान हमारे समाज को व देश को उन्नति के पथ पर ले जाने का दायित्व संभाल सकता है, न कि कोई चरित्रहीन मनुष्य ।

***

शारदा स्तवनम्

आनन्दिनी दीक्षित
प्र.स्ना.शि.(संस्कृत)

हे भगवति ! हे देवि सरस्वति ! तव चरणौ प्रणमाम: ।

हे वरदायिनि ! विद्यादायिनि ! श्वेताम्बरे नमाम: ।।

हंसवाहिनी वीणापुस्तकधारिणि ! हे जगदीश्वरि !

तव पदकमले पद्यप्रसूनं वयं सदा रचयाम: ।।

हे वागीश्वरि ! तव चरणौ रति भवतु सदा मम हृदये ।

हे करुणामयि ! हे मातेश्वरि ! वीणापाणि नमाम: ।।

हे परमेश्वरि ! मनसि विराजय ! कुरु सततं कल्याणम् ।

तव चरणौ हृदि धृत्वा कार्यं सर्वदैव करवाम ।

***

लक्ष्यम

आस्था सिंह
कक्षा - IX

लक्ष्यं त्वं साध्यम्

लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।
लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।।
सर्वे त्वां निवारयितुम् आगमिष्यन्ति
मार्गे न स्थगितव्यम् ।
लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।
लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।।

यदि तव शिरासु रक्तोऽसि ,
यदि पदतले भूमिरसि,
लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।
लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।।
मार्गे हंसा: अपि भविष्यन्ति
मार्गे काका: अपि स्यु: ।
न स्थगितव्यम् ।
गमनीयमेव । विघ्नान् शमनीयमेव ।
उत्तिष्ठ मानव ! जाग्रत !!
मार्गे स्थगितुं न प्रयोजनम् ।
लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।
लक्ष्यं त्वं साध्यम् ।।

***

मम देवा: (संकलितम्)

साक्षी पाल
कक्षा - IX

मातापितरौ गुरवो ज्येष्ठा:, देवा: खलु तान् प्रणमाम: ।

अतिथिर्बंधु: सकलो लोक:, श्रद्धेयास्तान् प्रणमाम: ।।

सूर्यश्चंद्रस्तारा गगनं, वंद्या: ननु तान् प्रणमाम: ।

धेनुर्वृषभ: खगाश्च पशव:, उपकर्तृन् तान् प्रणमाम: ।।

जननीं भूमिं भारतदेशं, भक्त्या वयं नु प्रणमाम: ।

गिरीन् तरूनपि नदीश्च कूपान्, प्रभातकाले प्रणमाम: ।।

अनिलजलादीन् अनलतृणादीन्, सर्वान् मनसा प्रणमाम: ।

वाग्देवीं तां ज्ञानदायिनीं , प्रयता नियतं प्रणमाम: ।

***

बाल: खेलिष्यति

अनामिका सिंह
कक्षा - VII

विभास्यति, प्रकाशं करिष्यति,
सूर्य: आकाशे उदेष्यति ।
गमिष्यति, लेखिष्यति,स्मरिष्यति ,
बाल: विद्यालये पठिष्यति ।
धाविष्यति, स्थास्यति, भ्रमिष्यति,
बाल: क्रीडाक्षेत्रे खेलिष्यति ।
वदिष्यति, चलिष्यति,हसिष्यति,
नायक: नाटके नर्तिष्यति।
बोधयिष्यति,शासिष्यति,पाठयिष्यति,
शिक्षक: कक्षायां भविष्यति ।

***

मम माता (निबंध:)

अन्वी नारायण
कक्षा - VII

मम माता विश्वस्य सर्वश्रेष्ठा माता अस्ति , इति अहं जानामि ।

किं किं न सा करोति मम प्रसन्नतायै । यदि सा भोजनं पचति, तदा मम रुच्यनुकूलमेव भोजनं भवति ।यदा परीक्षाकाले अहं रात्रौ जाग्रयामि अध्ययनं च करोमि , साऽपि जाग्रता एव भवति । सा मां विद्याध्यनमपि कारयति। मम वस्त्राणि अपि प्रक्षालयति ।

सत्यमेवोक्तम् –

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

अहं सगर्वं कथयामि यत् मम मातेव मम जीवनम् ।

***

अमृत बिन्दव: (संकलितम्)

लक्ष्मी देवी
कक्षा -IX

वाणी रसवती यस्य, यस्य श्रमवती क्रिया ।

लक्ष्मी दानवती यस्य, सफलं तस्य जीवितम् ।।

अर्थ - जिसकी वाणी रसवती है, जिसकी क्रिया से परिश्रम झलकता है , जिसका धन दान के लिए है ,वस्तुत: उसका जीवन धन्य है ।

यस्य कृत्यो न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रति: ।

समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ।।

अर्थ - जो व्यक्ति सर्दी,गर्मी, अमीरी-गरीबी, प्रेम -घृणा इत्यादि विषम परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता है और तटस्थ भाव से अपना राजधर्म निभाता है,वही सच्चा ज्ञानी है ।

सोऽस्य दोषो न मंतव्य:, क्षमा हि परमं बलम् ।

क्षमा गुणो ह्यशक्तानां, वीराणां भूषणं क्षमा ।।

अर्थ - क्षमा तो वीरों का आभूषण होता है, क्षमा से बढ़कर कोई बल नहीं। क्षमाशीलता कमज़ोर को भी बलवान बना देती है , वीरों का तो यह आभूषण होता ही है ।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन: ।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते , आयुर्विद्या यशोबलम् ।।

अर्थ - बड़ों का सम्मान व सेवा करने से उम्र, विद्या, कीर्ति और बल बढ़ता है ।

***

हे अम्ब !!! आगच्छ पुनरैकवारम्

वर्तिका यादव
कक्षा - IX

(चिन्तनम्)

माता सर्वथा माता एव । मम वा भवत: वा अन्यस्य । कथं माता भिन्ना भवेत् !

जन्मपूर्वं तेषु नवमासेषु अस्माकं मात्रा सह बहुवर्षेभ्य:य: बंध: अस्ति, स: न छिनत्ति न भग्न:

भवति कथञ्चित् ।

हृदयं वदति – माता सर्वथा माता एव ।

त्वं नृपाणाम् अपि माता दीनजनानाम् अपि । मातरं विना जगत् कथं कार्यं करोति ।

अम्ब ! अद्य भवत्या: गमनस्य समय: आगत: । मम मन: अतीव भावुको भवति । वद माते ! श्व: काम् आह्वयिष्यामि ?? कुत्र गमिष्यामि ?? धैर्यं धारयिष्यामि परं कथम् ?

हे अम्ब !!! आगच्छ पुनरैकवारम् ।

***

किम् अस्ति तत् पदम् ?

पुण्या मिश्रा
कक्षा - VIII

(शिक्षकेभ्य: समर्पितम्)

किम् अस्ति तत् पदम् ?

य: लभते इह सम्मानम्, य: करोति देशानाम् निर्माणम् । किम् अस्ति तत् पदम् ?

यं कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्, यस्य छायायां प्राप्तं ज्ञानम् । किम् अस्ति तत् पदम् ?

य: चरित्रं रचयति जनानाम्, दोषान् अपहरति मानवानाम् ।

गुरुरस्ति अस्य पदस्य नाम ।

सर्वेभ्य: गुरुभ्य: मम प्रणाम !

***

विजयी भव !

अनुप्रिया सिंह
कक्षा - VIII

(सैनिकान् प्रति)

हे युद्धवीरा: ! हे कर्मवीरा: !!

मा श्रान्ता: भव ! मा क्लान्ता: भव !

सदैव विजयी भव !

सदैव चरणो अग्रे निधेहि !

राष्ट्रे सदानुरक्तिं विधेहि !!

राष्ट्रप्रेम तव हृदये निवसति, मातृप्रेम तव अधरे विलसति ।

हे जल-थल-नभवीरा: !! रक्तस्थाने युष्माकं शिरासु राष्ट्रभक्ति: प्रवहति ।

जयन्तु विजयन्तु सदा !

विजयी भवन्तु सर्वदा !!

जयतु मातरम् ! जयतु भारतम् !!

***

अये मानव ! नैव जानासि ?

सौम्या त्रिपाठी
कक्षा – IX

(वृक्षाणां व्यथा)

पर्यावरणरक्षकोऽहम् , तव जीवनदायकोऽहम् ।

तव वृष्टिप्रदायकोऽहम्, अये मानव ! नैव जानासि ?

नैव श्रुतं त्वया कदापि, विषवृक्षोऽपि संवर्धति खलु ।

स्वयमेव विषोत्पादक: भवसि त्वम्, अये मानव ! नैव जानासि ?

वातावरणेऽस्मिन् शोभने, कथं त्यजसि प्रदूषणानि ?

अनेन किं कल्याणं भवति ? अरे मानव ! नैव जानासि ?

यथा तव जीवनं तथैवास्माकम्, एकस्याप्यंगुल्याच्छेदने खलु ।

कीदृशी पीडामनुभवसि त्वम् ? अरे मानव ! नैव जानासि ?

तदा कथं निर्दयो भूत्वा अस्माकं छेत्तुं प्रवृत्तोऽसि ?

मा मा भवत्वल्पधी: खलु !! अये मानव ! नैव जानासि ??

***

वसुधैव कुटुम्बकम् (निबंध:)

अंशिका मौर्या
कक्षा – X

केनचित् कविना उक्तम् –

'अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।'

अस्मिन् जगति जना: द्विविधा: सन्ति ।ये विशालचेता: भवन्ति,ते कदापि भेदं न मानयन्ति,किन्तु लघुचेतसमानवा: भेदं कुर्वन्ति यदि वयं सर्वे एकस्य परमात्मन: पुत्रा: तर्हि भेदभावस्य किं कारणम् ?

इदं मम इदं परस्य इति भावना एव क्लेशस्य कारणं भवति ।

ये स्वार्थं परित्यज्य परोपकाराय स्वजीवनं यापयन्ति, तेषां जीवनं सफलं भवति ।

विश्वकल्याणभावनया मानव: गौरवं लभते । 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति विशालभावनाम् आश्रित्य अस्माकं जीवनं सफलं करणीयम् ।सर्वकल्याणकामना अस्माकं सुभाषितेषु अपि वर्णिता –

'सर्वेऽत्र सुखिन: सन्तु, सर्वे सन्तु निरामया: ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दु:खभाग्भवेत् ।।'

अत: उच्यते यत् गौरवप्राप्त्यर्थं , सम्मानाय च स्वार्थभावना त्याज्या तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इयमेव भावना सर्वदा सर्वथा स्वीकरणीया ।

***

जलमेव जीवनम्

भानुप्रताप सिंह
कक्षा – VII

'जलमेव जीवनम्' इति उक्त्यनुसारम् अस्माकं जीवने जलस्य महती आवश्यकता वर्तते । जीवनाय जलं परमावश्यकं वर्तते । सर्वेषां तृषाया: निवारणं जलेनैव भवति । पृथिव्यां जलं पर्याप्तं भवति अत: पृथ्वी 'नीलग्रह:' इति उच्यते । जलस्य स्वरूपमपि परिवर्तते । हिमस्वरूपं, वाष्पस्वरुपं, मेघस्वरूपं जलस्वरूपञ्च । अयं जलं महासागरेषु, वायुमण्डले पृथिव्यां च परिभ्रमति । जलस्य तत् परिभ्रमणं जलचक्रं कथ्यते ।जलप्रपातेभ्य: निर्झरितं जलं केषां मनांसि न मुह्यति ।

अतएव कदापि जलस्य बिन्दुरपि व्यर्थ मा कुरुत । यतोहि –

'जलमेव जीवनम् ।'

***

ART GALLERY

Portrait

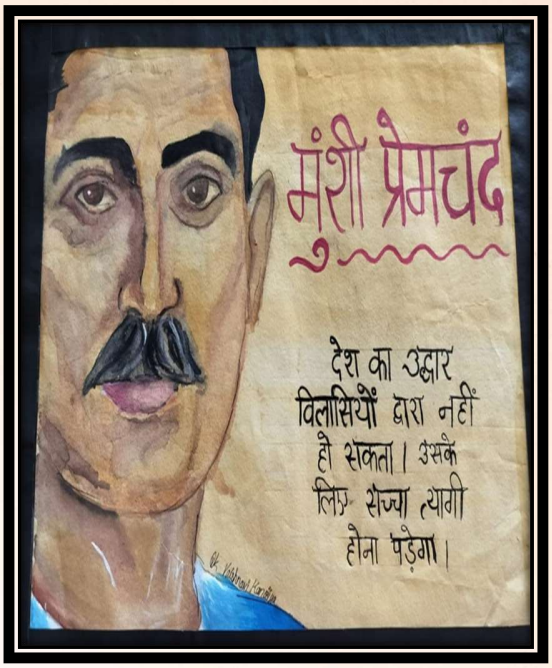

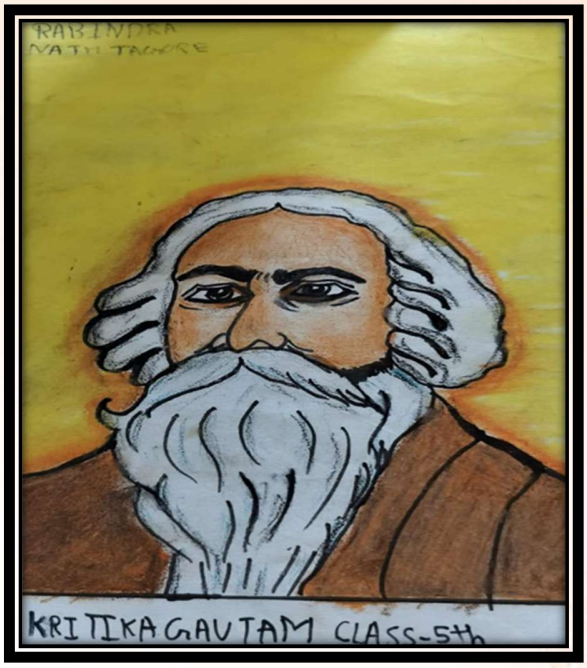

मूर्ति कला

मूर्ति कला

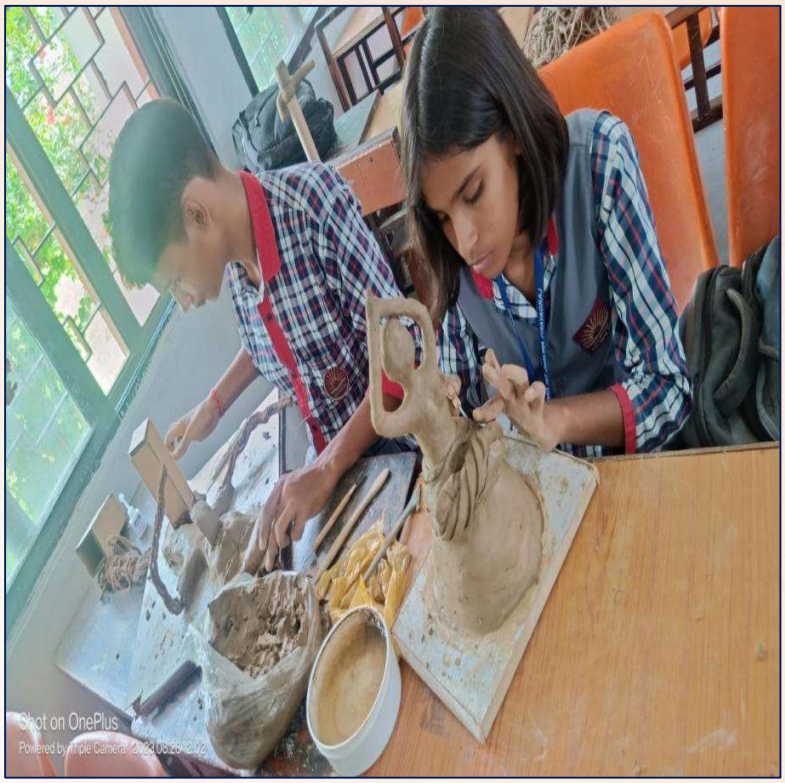

चित्रकला

Name: Chhavi
Class: 11th
School: Kendriya vidyalaya iiit jhalwa prayagraj.
Topic: heat stroke
Size of sheet: A3

Best Practices

Achievements of Students

Achievements of Students

FLN, NEP, NIPUN

स्वच्छता

SPORTS

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
53 वीं संभागीय खेल-कूद प्रतियोगिता 2024

Kendriya Vidyalaya Sangathan
Varanasi Region
Regional Sports Meet (Boys)
Basket Ball, Table Tennis,

OPPO F21s Pro 5G
baller | 2024.07.15 10:20

SPORTS

पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर - चन्दौली
वाराणसी संभाग

केन्द्रीय विद्यालय
KENDRIYA VIDYALAYA
IIIT, JHALWA, PRAYAGRAJ
शिक्षा सप्ताह
खेल दिवस

Embracing Change with A Smile: A New Adventure Awaits

Riddhi Srivastava
Class - X

Life is an adventurous journey, and as a student of class 10, you are about to embark on a new chapter filled with excitement, challenges, and new beginnings. Change can feel overwhelming specially when it means leaving behind the familiar comforts of Kendriya Vidyalaya, including your friends and cherished memories. But fear not, for this journey is an opportunity to spread your wings, discover hidden talents, and create new memories that will warm your heart. for years to come. So, let's drive into this article that celebrates the. "magic of embracing charge as a class 10 student!

A Heartfelt farewell: Kendriya Vidyalaya, a wave of emotions rushes through you. You'll miss the laughter -filled classrooms, the friendly faces that brightened your day, and unforgettable moments shared with your friends. Take a moment to treasure these memories, for they will forever hold a special place in your heart.

Hello, New School Adventure: Imagine stepping into a new school, like a protagonist entering a story book world. The hallways are filled with excitement, the classrooms are a canvas awaiting your unique touch, and the possibilities seem endless. Embrace this new adventure with open arms and a smile on your face. Remember, you are not alone in this journey, eager to make new friends and create lasting bonds.

Making friends, one smile at a time: Making new friends might so new seem doubting, but don't worry, your smile is the key, smile, and your smile find that others will smile back. Be yourself, show genuine interest in others, and don't be afraid to initiate conversations. Join activities, group project-they're great opportunities to meet like-minded classmate who might become lifelong friends.

Honouring the Past, Embracing the Present: while it's natural to feel nostalgic about Kendriya Vidyalaya, remember that the present is filled with exciting possibilities. Cherish the memories, hold on to your dear friends, and keep in touch. But also embrace the present, for it holds new friendships, adventures and opportunities for personal growth. Blend the best of both worlds to create a beautiful tapestry of your school life.

Conclusion: As a class 10" student, you possess an incredible spirit of resilience and adaptability. Embrace the change with a smile, for it is through these experiences that you'll grow, learn and create lasting memories. Your new school is waiting to welcome you with open arms, ready to embark a new adventure together, so, gear up, held your head high, and let the magic of this new chapter! Unfold. Remember, change is the gateway to a world of endless possibilities.

***

"Tears and Smiles: Embracing Change"

Samriddhi Dubey
Class - XI

Leaving behind the halls we roamed,
Kendriya Vidyalaya, a place we called home
class 10 bids farewell, tears softly shed.
New school, new friends, the path ahead,
Memories cherished, etched deep within
Embracing change, heart filled with a bittersweet din.
Through tears and smiles, we'll find our way,
A poignant journey, emotions in sway.

***

RIDDLES

Kritika Singh
Class - VII

- **It belongs to you but your friends use it more. What is it?**
- **I am so simple that I can only point, yet I guide people all around the world. What is it?**

- **What begins with *t* ends with *t* and has *t* in it?**
- **Remove my skin, I won't cry but you might!**
- **Where are the lakes always empty, the mountains always flat and the rivers always still?**

ANSWER

Yours Name

Compass

Teapot

Onion

Maps

BASKET BALL

Krish
Class - XI

Basketball is the world's most popular sport, and is played in more than 200 countries. In December 1891, James W. Naismith a Canadian Instructor at YMCA Training School can be still fit and warm during the cold winter. He made 13 rules which some are still now. I choose this game to investigate because of two main reason -First, I realize that I didn't know the facts about basketball Second because I like playing basketball than any other sports, so I thought I would enjoy it.

Basketball has some extensive and enthralling history.

1. CREDITS TO NAISMITH

Basketball enthusiasts must be happy to be introduced to a name they will never forget: James Naismith – the man who had been asked to invent an indoor winter activity by his boss at a YMCA in Springfield and Basketball was the fruit.

2. THE FIRST BASKETBALL WAS NOT ACTUALLY "BASKETBALL".

As bizarre as it sounds: it was a soccer ball.

3. DRIBBLING? NOT ALLOWED.

Players never could advance the ball. Instead, each player had to throw it from wherever he caught it. The first team credited with advancing the ball by dribbling it played at Yale in 1897 and the official allowance for the dribble, just one per possession at first, were adopted four years later.

4. THE MORE THE BETTER.

The number of players per side was never specified. Naismith invented an indoor winter activity and wanted a game flexible enough to include whoever wanted to play. For a while, the total number of players was a default 18, nine per side, the same number that showed up for the very first game.

5. NO INJURY: NO FOUL.

Shouldering, holding, pushing, tripping, or otherwise striking an opponent was never allowed. However, such offenses were never considered fouls until 1910, with the advent of a rule disqualifying a player for committing four of them. That total was raised to five in 1946, in the inaugural rules of the Basketball Association of America (the original name of the National Basketball Association), and to six the next year.

6. REFEREES USED WATCHES.

That is because one of the official duties of early refs was timekeeping. Then again, there wasn't that much time to keep: the 24-second shot clock wasn't instituted until 1954, to combat stalling tactics NBA teams had begun to employ.

7. THE GAME'S LIFE WAS SHORT.

Naismith proposed two 15-minute halves, with five minutes of rest in between.

***

SKY FULL OF MOUNTAINS

Esha Tiwari
Class - XII

Places like this, hear you breathe.
Make you wonder,
About the worlds above and beneath
This one and the ones to see.

Oh! the silence tears me open,
Makes my thoughts bleed into the wild,
Scattered all across the mountains;
They lie in nature's lap.
She holds them with a simple fear,
Of getting lost in the plains like.
The noble men of the places near.

I wonder what pain she holds,
Of knowing her children in places of fears.
Pounding all across her chest,
Are the faint voices of the ones?
Lost in the noble sheer.
Too bright to see, too precious to just blind away
Oh, what misery it is to be,
The mighty sun and the liver of thee.

Oh, it's what they say,
Places like this,
Hear You breathe,
Makes your wonder,
About the worlds above and beneath
This one and the ones you see

***

MORROW

Esha Tiwari
Class - XII

Silence is in vain,
Misery is the pain,
My heart Shattered in a million pieces.
I pick them up with utter
Distrust in the beauty of pain.

Fool me once, fool me twice,
How many times can you survive,
In this accursed world full of pain,
Futility and the will to revive.

God doesn't have favourites
But his acts are full of surprises,
One child sleep with the belly full of pies
While the other hopes to never
Wakeup in this world with only words
For your misfortune and the will to survive.

***

SKILL

Jhalak Verma
Class - VI

Our skills don't let us fail, don't let us fail
If you try you can
If you don't try so you can't

Try every time, try every time
Because our skills don't let us fail
Don't be sad you can
Try every time, if you can.

***

Literature: A World of Words.

Tamanna Singh
Class - XII

Literature is the word which is used to describe books, stories, poems and written works. Literature is a form of art as it allows us to expand our imagination, understand emotions and helps us to understand the world in a better way.

People express themselves by writing stories, poems and novels and share their knowledge, their experience with others. Reading stories, poems and other work you prefer, can make you experience vast emotions. It helps to learn to analyse, question and form your own opinions. Reading as a hobby can make you feel relaxed and help in stress relief. A lot of people develop understanding of emotions and get inspired by the Literary works.

Some Literary works You should give a try:

And Then There Were None- *Agatha Christie*
The Waste Land: *TS Eliot*
The Raven: *Edgar Allan Poe*
Leaves of Grass: *Walt Whitman*
Alice's Adventures in Wonderland - *Lewis Carrol*
The Adventures of Tom Sawyer: *Mark Twain*
Totto-chan: *Tetsuko Kuronayagi*
Botchan: *Natsume Soseki*

***

The Crescent Moon

Afzal A Siddiqui
TGT (Eng)

Ah! she is gazing, the crescent moon,
In the mid summer's, hot and scorching, noon.

Her eyes are opened and doors are shut,
The dame is lying in an exposed hut.

Thinking and thinking and thinking so deep,
The Motion of moon's and men’s she peep

The former disburses its light so cool,
The later is chasing the darkness, so fool

The darkness of greed, possession and lust
The power, position will perish in dust

Bless him O! god with peace and boon
Ah! she is Gazing the crescent moon.
In a midsummer's hot and scorching noon .....

***

ALPHABET' FOR MOBILE THROUGH THE HELP OF MOBILE APPS NAME

LAKSHMI DEVI
CLASS -IX

A → Amazon
B → Browser
C → Camera
D → Disney + Hotstar
E → Email
F → Facebook
G → Google
H → Hangouts
I → Instagram
J → Jio Cinema
K → Kinemaster
L → Lenskort
M → Myntra
N → NCERT Books
0 → Olx
P → Play store
Q → Quora
R → Remini-AI Enhancer
S → Spotify Twitter
U → Uber Technologies Inc
V → VLC Media Player
W → WhatsApp
X → Xender
Y → You Tube
Z → Zomato

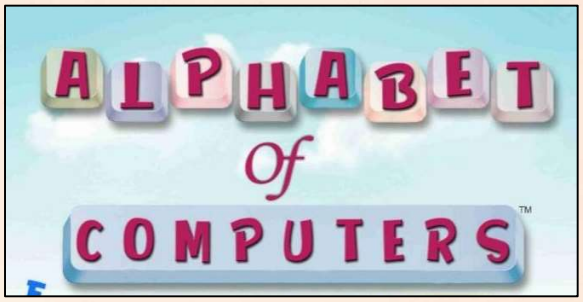

TRY-TRY AGAIN

SHREYA
CLASS - VII

Tis a lesson you should heed,
If at first you don't succeed,
Try-try Again

Then your courage should appear,
For if you will persevere,
You will conquer, never fear
Try-try Again;

Once or twice, though you should fail,
If you would at last prevail,
Try- try Again,

If we strive, 'tis no disgrace
Though we do not win the race;
What should you do in the case?
Try-try Again –
If you find your task is hard,
Time will bring you your reward.
Try-try Again-

All that other folks can do.
Why with patience, should not you?
Only keep this rule in view:
Try-try Again.

***

A LONELY GIRL!

Saumya Tripathi
Class - IX

Once upon a time, a girl lived with her family in a city. Her name was Kavya. She hated herself because her stepsister used to harass her a lot. She used to tease her with everything or the other. On reaching her school, Kavya used to feel very happy but when she had to return home, she felt very sad and lonely. She used to try her best to ignore their words and to be happy but after listening their excruciating words about her from her family members, she became rather depressed Just because of those bad treatments she received from her family members, she also considered herself a burden because her family measured her the burden of their life and they wish to kill her. That is why she also wanted to kill herself. One day she thought that she would go far away from this trouble, so she left her home and started living in an orphanage. There a businessperson adopted her. He raised Kavya as her father and groomed her the best way he could. She grew up and became a very famous detective.

***

SHIKSHA SAPTAH

Selfi Point

****धन्यवाद ****